जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३, २४२१७८५०

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४६ वा ❖ अंक ९ वा ❖ मे २०१५ ❖ वीर संवत २५४१ ❖ विक्रम संवत २०७१

या अंकात

	पान नं.
• १०८ फूट उत्तुंग ऋषभदेव प्रतिमा निर्माण, मांगीतुंगी तीर्थ - नाशिक	१५
• श्रमण संघीय साधू सम्मेलन, इन्दौर	१७
• इच्छाकारेण संदिसह भगवं इन्दौर संमेलन	२०
• आनंद तीर्थ, चिचोंडी - वर्षीतप	२३
• कव्हर तपशील	२४
• गुरु मंदीर प्रतिष्ठा महोत्सव, पुणे	२५
• महावीर गाथा	३१
• महामंत्री की साधना	३५
• धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	४१
• धर्म और धार्मिकता	४३
• आनंद सुक्ती सुधा	४५
• महावीर का वीतराग दर्शन	५१
• मोमबत्ती और आग	५५
• गोल्डन डायरी	५६
• प्रभावशाली व्यक्तित्व में लेखन कला की भूमिका	५९
• मृत्यु के समय क्या होता है ।	६७
• इंसाफ कर	६८
• धर्म जैसी कोई निधि नहीं	६९
• महावीर अथवा महाविनाश	७९
• आई ते सुपर मॉम एक प्रवास	८०
• स्थितप्रज्ञ बनो	८३
• हास्य जागृति	८५
• परिवार की नैया पार लगानी है तो बनना ही होगा पतवार	८७
• जिद्द	८८
• जबकि	८९
• जैन समाजाचा पद्म पुरस्कारावर मोठा ठसा	९१
• सन्मति तीर्थ	९२
• स्थानांगसूत्रावर एक दिवसीय सेमिनार	९३
• उल्लू बनविणे आहे	९५
• सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे	९७
• भगवान महावीर जन्मकल्याणक - पुणे	१०३

- अहिंसा पुरस्कार - चिंचवड १०९
- महावीर व्याख्यानमाला, नाशिक १११
- वर्धमान अ‍ॅकॅडमी, चंद्रपूर ११२
- सिध्दी फाऊंडेशन, पुणे ११३
- JATF - Pune ११५
- श्री. गौरव बलदोटा - सुयश ११६
- जीतो पुणे चॅप्टर B 2 B सेमिनार ११७
- श्री अमरचंदजी नाहटा - डाक अनावरण १२४
- मानव मिलन संस्था, पुणे १२५
- आनंदऋषिजी हॉस्पिटल-अहमदनगर १२६
- अहमदनगर मर्चन्ट बँक, पुरस्कार १२७
- श्री विनयसागरजी - राष्ट्रपती सन्मान १२८
- श्री. सत्यपाल जैन, चंदीगड १२९
- दिगंबर जैन ट्रस्ट, चिंचवड १२९
- सुख आहे अवती भवती १३१
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी -१५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी - ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी - ३५० रु.

(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ३० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/on line/RTGS/AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

'जैन जागृति' - वर्गणी बँकेत भरू शकता

जैन जागृति मासिकाची वर्गणी रोखीने, मनीऑर्डरने, पुणे चेक, अ‍ॅट पार चेक, ड्राफ्टने पाठवावी किंवा **'भारतीय स्टेट बँक'** मध्ये जैन जागृति खात्यात वर्गणी भरू शकता. बँकेच्या पे स्लीपवर **'जैन जागृति'** लिहावे. बँकेचा तपशील पुढीलप्रमाणे

STATE BANK OF INDIA Branch - Market Yard, Pune.
Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

आपण जर वर्गणी बँकेत भरली तर वर्गणी भरल्यानंतर पे स्लीपची झेरॉक्स बरोबर आपला ग्राहक क्रमांक, पूर्ण नाव, पत्ता, मोबाईल नंबर ऑफीस मध्ये पाठवावे अथवा बँकेची स्लीप स्कॅन करून E-mail : jainjagruti1969@gmail.com वर पाठवावी. ई-मेलमध्ये ग्राहक क्र., पूर्ण नाव, पत्ता, फोन, मोबाईल नंबर द्यावा म्हणजे आपल्या नावाने वर्गणी जमा केली जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

पंचवार्षिक	१५५०/-रु.	त्रिवार्षिक	९५०/-रु.	वार्षिक	३५०/-रु.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९११ www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

❖ **भोसरी, चिंचवड, निगडी** – श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९११९४०९
❖ **पुणे शहर ❖ जळगाव** – श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
❖ **पुणे शहर** – श्री. अभिजीत डुंगरवाल, ९४२३२३४१६०
❖ **गुरूवार पेठ, पुणे** – श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
❖ **धनकवडी, पुणे** – श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे** – निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
❖ **वडगाव शेरी, पुणे** – सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
❖ **वडगाव मावळ, पुणे** – श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
❖ **खडकी, पुणे** – श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
❖ **सासवड, हडपसर, पुणे** – श्री. राजेश प्रदीपजी कुवाड, मो. ९०२८५६६९७२
❖ **दापोडी, सांगवी, पुणे** – श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
❖ **नांदेड सिटी, पुणे** – श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
❖ **दौंड, श्रीगोंदा** – श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
❖ **अहमदनगर** – श्री. महेश एम. मुनोत- मो. ९४२०६३९२३०
❖ **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका** – श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
❖ **सोनई** – श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१
❖ **औरंगाबाद** – श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
❖ **मुंबई** खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
❖ **धनसोली, नवी मुंबई** – श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
❖ **नाशिक** – श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
❖ **नाशिक** – मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
❖ **बीड** – श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
❖ **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
❖ **श्रीरामपूर** –श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
❖ **लासलगाव** – श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
❖ **बारामती**- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
❖ **अंमळनेर, जि. जळगाव** – श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
❖ **शहादा, जि. नंदुरबार** – श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
❖ **कुर्डुवाडी, जि. सोलापूर**- श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ९९६००००२५
❖ **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर** – श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
❖ **मिरज, जि. सांगली** – श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
❖ **कोल्हापूर** – सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२५४२२५३
❖ **सातारा व सातारा जिल्हा** – श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४
❖ **वासंदा- नवसारी (गुजरात)** – श्री. राजकुमार बंसीलालजी पारख, मो. : ०९४२९४५०२९६
❖ **दिल्ली** – श्री. राजेश शिंगवी, दिल्ली १६. मो. ०९९९९१८८२८८

Highest jain idol in world - The Statue of Ahimsa

१०८ फूट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव प्रतिमा निर्माण

मांगीतुंगी सिध्दक्षेत्र, जिला – नासिक

११ से १८ फरवरी २०१६ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकूंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव

सिध्दक्षेत्र की महत्ता

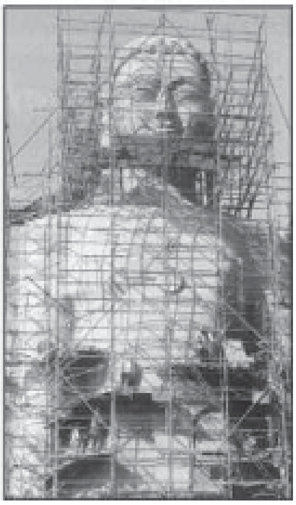

जैनधर्म के पद्मपुराण आदि जैन ग्रंथों में वर्णित है कि वर्तमान से १२ लाख वर्ष पूर्व बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के तीर्थकाल में मांगीतुंगी सिध्दक्षेत्र से ९९ करोड़ महामुनियों ने सिद्धपद की प्राप्ति की है। नासिक जिले में मांगीतुंगी (भिलवाड़) ग्राम की उत्तर दिशा में एक पर्वतराज है, जिसकी दो चूलिकाएँ है, जिनमें एक मांगीगिरि व दूसरी तुंगीगिरि के नाम से प्रसिद्ध है। आसपास का पूरा पर्वतीय क्षेत्र ''गालना हिल्स'' कहलाता है, जो समुद्री सतह से ४५०० फुट की ऊँचाई पर है। इन दोनों गिरि पर दिगम्बर जैन गुफाएँ है तथा दोनों गिरि की चोटी गगनचुम्बी शिखर के समान है। दोनों गिरि पर हजारों वर्ष प्राचीन प्रतिमाएँ एवं यक्ष यक्षिणियों की मूर्तियाँ विराजमान हैं और तलहटी से २५० फुट की ऊँचाई पर शुध्द-बुध्द मुनिराज के नाम से दो गुफाएँ हैं, जिनमें मूलनायक भगवान मुनिसुव्रतनाथ तथा भगवान नेमिनाथ विराजमान है। साथ ही यहाँ पर अनेकों दिगम्बर जैन प्रतिमाएँ मांगीतुंगी गिरि पर उत्कीर्ण हैं, जिनके दर्शन-वंदन हेतु प्रतिदिन सैकड़ों जैन श्रध्दालुगण आकर पैदल अथवा डोली से पर्वत की वंदना करते हैं।

पर्वत की तलहटी में भी दिगम्बर जैन परम्परा के अति प्राचीन ५ जिनमंदिर वंदनीय हैं, जिनमें अतिशयकारी चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनमंदिर, भगवान आदिनाथ जिनमंदिर, संकटमोचन श्री पार्श्वनाथ जिनमंदिर, भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की २१ फूट उत्तुंग विशाल खड्गासन प्रतिमा तथा २४ तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान है, सहस्रकूट कमल मंदिर भी दर्शनीय है।

ऐतिहासिक एवं अतिशयकारी बिन्दु

''सन् १९९६ की बात है, जब जैनधर्म के सुप्रसिध्द तीर्थ, ९९ करोड़ महानमुनियों की निर्वाणभूमि मांगीतुंगी सिध्दक्षेत्र नासिक (महा.) में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, महातपस्विनी, महाआराधिका एवं समाज के समक्ष अद्भुत चिंतन की प्रदात्री, दिव्यशक्ति गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के मन में एक दिन मांगीतुंगी पर्वत पर बैठकर एक ऐसा दिव्य चिंतन प्रगट हुआ कि जिसने पंचमकाल के इतिहास में जैनधर्म की सर्वाधिक ऊँची पताका को लहराने का अवसर प्रदान कर दिया। उनका दिव्य चिंतन था कि – यहाँ किसी चट्टान में पूर्व मुखी भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का अखण्ड पाषाण छिपा हुआ है, जिसमें विश्व की सबसे ऊँची दिगम्बर जैन प्रतिमा का निर्माण होना चाहिए।''

''यह पूज्य माताजी के कंठ में विद्यमान साक्षात् सरस्वती का ही अतिशय था कि मांगी पर्वत के नीचे (सुधबुध गुफा के ऊपर) वास्तव में ५०० फुट की एक

अखण्ड चट्टान प्राप्त हो गई। बस फिर क्या था, २७ अक्टूबर १९९६ शरद पूर्णिमा को पूज्य माताजी के मुखारविंद से घोषित दुनिया के इस महान आश्चर्य को सफल करने के लिए दिगम्बर जैन समाज का बच्चा-बच्चा दृढ़ संकल्पित हो गया।''

''पूज्य माताजी ने इस अत्यन्त कठिन एवं कठोर परिश्रमी कार्य को करने से पूर्व अपने ध्यान-चिंतन के आधार पर समाज को तीन महत्वपूर्ण बातों का निर्देश दिया (१) प्रतिमा भगवान ऋषभदेव के नाम से ही बनना चाहिए (२) प्रतिमा का निर्माण पर्वत पर पूर्वाभिमुख ही होना चाहिए तथा (३) प्रतिमा निर्माण की माप नख से सिर तक १०८ फुट की खड्गासन होना चाहिए। ये तीन बिन्दु भगवान ऋषभदेव की विश्व में सबसे ऊँची १०८ फुट की इस महान आश्चर्यकारी प्रतिमा के अवतरण में चमत्कारिक ही सिध्द हुए और इसका परिणाम आज हम सबके मध्य है।

''३ मार्च २००२ की वह तिथि अत्यन्त शुभ थी, जब पर्वत की अखण्ड पाषाण शिला में पूर्वाभिमुख भगवान ऋषभदेव की १०८ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा के निर्माण का शिला पूजन समारोह अनेक श्रेष्ठीजनों, समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं व केन्द्र तथा राज्यस्तरीय अनेक मंत्रियों, सांसद, विधायक, श्रेष्ठ इंजीनियर्स, भूगर्भशास्त्री, वास्तुशास्त्री आदि की उपस्थिति में लाला महावीर प्रसाद जैन, साउथ एक्स., दिल्ली के करकमलों द्वारा ठाट-बाट के साथ सम्पन्न किया गया।''

१०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव प्रतिमा निर्माण के महत्वपूर्ण तीन चरण

इस कार्य के प्रथम चरण में पर्वत को काटने-छाँटने के दुरुह कार्य में भी पूज्य माताजी के आशीर्वाद से ही सफलता प्राप्त हुई और लगभग १० वर्षों के अत्यन्त कठिन परिश्रम से पर्वत पर अखण्ड पाषाण की विशाल शिला निकाली जा सकी। कठिनता के कारण यह कार्य अत्यन्त ही दूरदर्शिता और योजनाबध्द तरीके से सम्पन्न किया गया।

द्वितीय चरण में हम सबके समक्ष अखण्ड पाषाण में दुनिया की सबसे बड़ी दिगम्बर जैन प्रतिमा का निर्माण किया जा रहा है। खड़े पाषाण पर मूर्ति को उकेरने का कार्य भी काँच को तरासने के समान ही है, जिसको अत्यन्त कुशल कारीगरी के साथ मूलचंद रामचंद नाठा फर्म जयपुर के सौभाग्यशाली कलाकारों के द्वारा सम्पन्न किया जा रहा है।

तृतीय चरण इस महान कार्य के लिए ठीक वैसा ही है जैसे मंदिर बनने के उपरांत शिखर पर कलशारोहण किया जाना शेष हो। अर्थात् इस विशाल प्रतिमा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव, जिसके लिए ११ फरवरी से १७ फरवरी २०१६ की तिथियाँ निर्धारित की गई हैं। पश्चात् १८ फरवरी को प्रथम महाकुंभ मस्तकाभिषेक होगा तथा इसके उपरांत आगे भी कुछ दिनों तक जारी रहेगा।
www.highestjainidolinworld.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय वृहद साधु–साध्वी सम्मेलन नए युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी को ओढ़ाई चादर – इन्दौर

इन्दौर – दशहरा मैदान रविवार दि. २९ मार्च २०१५ को जैन कुंभ का गवाह बना। यहाँ देश के २० प्रांतों से करीब एक लाख लोग शामिल हुए। आचार्य शिवमुनि ने नए युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी को जैसे ही केसरिया रंग की खुशबू वाली पवित्र चादर ओढ़ाई, पूरा पंडाल जयकारों से गूँज उठा। साथ ही देशभर से आए ५१००० अहिंसा दूतों को देश की सेवा, अहिंसा, गोसेवा, समाजसेवा, महावीर के संदेश के प्रचार, शाकाहार के लिए प्रेरित करने का संकल्प दिलाया।

रविवार को जैन वृहद साधु सम्मेलन का समापन व चतुर्विध संघ सम्मेलन दशहरा मैदान पर हुआ। इस मौके पर आचार्य डॉ. शिवमुनि ने कहा भगवान कृष्ण, महावीर, महात्मा गांधी के इस देश में गोहत्या हो रही है, गो मांस का निर्यात किया जा रहा है, मांस उत्पादन एवं विक्रय, निर्यात पर सब्सिडी दी जा रही है, इसे तुरंत रोंके। गृहमंत्रीजी, सरकारें आती हैं, चली जाती हैं। आप गोवध पर रोक लगाएँ। गोवंश की रक्षा के लिए इसी बजट सत्र में कानून बनाएँ। अटलजी कहते थे, भाजपा सरकार आने पर गोवंश वध पर रोक लगाएँगे, तो केंद्र सरकार इस ओर ध्यान क्यों नहीं दे रही है।

केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, जैन धर्म भारतीय संस्कृति का अनमोल रत्न है। जैन धर्म के सिद्धांतों को मानकर ही असल में आतंकवाद की समाप्ति हो सकती है, क्योंकि यह धर्म अहिंसा का वातावरण पैदा करता है, अहिंसा की सोच रखने वाला आतंकी गतिविधियों में कैसे शामिल होगा। मैं और मेरी सरकार प्रयास करेंगे कि देश में गोवंश को लेकर आम सहमति बनाने के प्रयास करेंगे, ताकि इस विषय में अहम फैसला हो सके।

मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा, जो खुद को जीत ले वह महावीर और दूसरों के लिए जिए वही जैन है। यह काम जैन ही करते है, एक संत का दर्शन जिंदगी बदल देता है और कल्याण हो जाता है। यहाँ इतने सारे संतों के दर्शन से हम धन्य हो गए। उन्होंने कहा, गोहत्या ही नहीं गोमांस के परिवहन, विक्रय आदि पर भी मानव हत्या जैसी कारवाई होगी, जिस वाहन में यह पाया गया, राजसात होगा। संतों की कृपा रही तो मध्य प्रदेश इतना अन्न पैदा करेगा कि पूरा देश यहाँ के अन्न से पेट भर लेगा।

सम्मेलन में मंत्री, सांसद, विधायक भी पहुँचे, मंच पर केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्रीपद यशो नाईक, महापौर मालिनी गौड, राज्यमंत्री सुरेंद्र पटवा, सांसद डॉ. सत्यनारायण जटिया, सांसद दिलीप गांधी, विधायक सुदर्शन गुप्ता, उषा ठाकूर, महेंद्र हार्डिया समेत सात

विधायक, कैलाश शर्मा, जैन कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष नेमनाथ जैन मौजूद थे। अतिथि स्वागत रमेश भंडारी, जिनेश्वर जैन, डेविस जैन, डिपिन जैन, रेणु जैन, अचल चौधरी, सुमतिलाल कर्नावट, आनंदप्रकाश जैन, दीपक जैन ने किया। संचालन हस्तीमल झेलावत ने किया।

नमोकार महामंत्र के बीच युवाचार्य को ओढ़ाई चादर

महावीर, शिवाचार्य के जयकारों, नमोकार महामंत्र के जयघोष के बीच युवाचार्य महेंद्रऋषिजी को केसरिया रंग व खुशबू वाली पवित्र चादर ओढ़ाई गई। चादर को साधु-संतों व अतिथियों ने स्पर्श कर श्रद्धाभाव प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में आचार्य शिवमुनिजी ने श्रमण संघ के महामंत्री सौभाग्यमुनिजी को महाश्रमण पद से अलंकृत किया।

चयन प्रक्रिया के विरोध में कई संत नहीं हुए शामिल

चयन प्रक्रिया पर संतों का विरोध तीसरे दिन भी जारी रहा। श्री प्रवीणऋषि म.सा.ने कहा कि चयन प्रक्रिया के विरोध के चलते आयोजन में करीब १८० साधु-साध्वी शामिल नहीं हुए। इस असहयोग का ये मतलब नहीं है कि संघ दो भागों में बंट गया है। सिर्फ चयन प्रक्रिया के विरोध स्वरुप हम सम्मेलन में शामिल नहीं हुए।

५१ हजार अहिंसा दूतों ने लिया भ्रष्टाचार मुक्त भारत का संकल्प

समारोह में देशभर के ५१ हजार अहिंसा दूतों को देशसेवा का संकल्प भी दिलवाया।

- व्यसन नहीं करेंगे। जो कर रहे है उनसे भी व्यसन मुक्ति के लिए आग्रह करेंगे।
- सरकारी नियमों का पालन।
- रिश्वत नहीं देना।
- दहेज सहित अन्य कुप्रथा पर रोक।
- बेटी बचाओ, बेटी पढाओ।
- रक्तदान करना, नेत्रदान।
- एक घंटे का समय रोज समाज को देना।

साधु सम्मेलन के महत्वपूर्ण निर्णय

१. श्रमण संघ के युवाचार्य पद पर श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. मनोनित किये गये है। यथासमय जिनके भावी नेतृत्व में आगे भी श्रमण संघ की यशोपताका फहराती रहेगी।

२. श्रमण संघ के समस्त संत सतियों के लिए मोबाइल फोन, आई पेड, लेपटॉप व इंटरनेट का प्रयोग पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। सेवा में रहने वाले स्टाफ सेवक मोबाईल रख सकते है.

३. श्रमण संघीय संत सतियों के लिये गोचरी की परम्परा को यथा शक्ति निरंतर बनाये रखने का निर्णय हुआ। निर्णय के अनुसार स्थानक में एवं किसी भी शहर या गाँव में रहते हुए टिफिन का उपयोग पूर्णतया बंद रहेगा। विहार के दौरान टिफिन गोचरी आवश्यकतानुसार खुली है

४. स्थानकवासी परम्परा को मजबूत करते हुए निर्णय किया गया कि श्रमण संघ के समस्त साधु साध्वियों के लिये अनुष्ठान, कलश स्थापना, काल सर्प योग निवारण, धन संग्रह सम्बधी शिबिर पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा।

५. श्रमण संघ के कोई भी साधु साध्वी मोटर कार आदि का उपयोग बिल्कुल नहीं कर पायेंगे

६. श्रावकों को हिदायत दी गयी कि अब से किसी भी संत सती के पास ११ से ज्यादा व्यक्ति विनती हेतु नहीं जाए। किसी भी कार्यक्रम में महंगी पत्रिकायें नहीं प्रकाशित की जायेगी केवल ४ पेज की साधी पत्रिका ही उपयोग में लायी जाये ।

७. लम्बे विहार में कपड़े की चप्पल का उपयोग किया जा सकेगा। ●

साधु-सम्मेलन, इन्दौर
''इच्छाकारेणं संदिसह भगवं''
लेखिका : सौ. राजश्री पारख, पुणे

मैं एक आम आदमी आम जनता आम आवाज... पिछले दिनों से महनों से साधु-सम्मेलन की धुन पुरे भारतभर में जैनियों की जनता में लगी हुई थी। बहुत सी आशाएँ, बहुत से परिवर्तन, नव पिढ़ीके लिए एक नयी आस, एक नया दौर जैन समाज में देखने मिलेगा.. इतने वर्षोंसे साधु-सम्मेलन जो हो रहा है।

एक नया परिवर्तन लायेगा। नयी पिढी के साधु-साध्वीयों के लिए एक नयी दिशा- जिनवाणी के फाउंडेशन के साथ एक नयी लहर लायेगा इन्हीं के इंतजारमें हम सब!

ज्ञानीयों ने कहा है, 'परिवर्तन ही जीवन है' एक नयी दिशा... एक नयी लहर ... एक नये विश्वास.. एक नये जोश के साथ देखना चाहते थे। फिर एक बार जैन शासन का झंडा पुरे भारत भर नहीं अपितु पुरे विश्व में लहराता देखना चाहते थे। आचार्य श्री जी से बहुत सारी उम्मीदें थी।

साधु- सम्मेलन की तारीखें, दिन पास आने लगे। पर एक एक बातें सुनकर, देखकर मन बहुत अस्वस्थ हुआ। जो घोषणा ठीक समय पर होनी थी वह पहले ही थोडे ही साधु-साध्वीयोंके सानिध्य में हुई। युवाचार्य जी की घोषणा की गयी। जिस दिन करनी थी उसके पूर्व??

जिस कार्यक्रम के लिए महत्वपुर्ण घोषणा के लिये पुरे भारतवर्ष से लोग आनेवाले थे, उनका क्या? फिर उनको क्यों बुलाया? और युवाचार्यजी की घोषणा भी ऐसे गडबड़ में क्यों हुई?

पुर्ण विश्वास था- युवाचार्य श्री जी परम पूज्य उपाध्याय श्री जी होंगे। उनका तप, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य हेतु ऐसा ही लगा था। फिर ऐसा क्यों हुआ?

उनके छह चातुर्मास का लाभ मुझे मिला है। और एक चातुर्मास में तो मैं समिती की अध्यक्षा भी रह चुकी हूँ। ऐसे संत... जिन्होंने...

१) उत्तराध्ययन - अंतगढदशांग के आधार पर महावीर को घर-घर पहुँचाया। एक एक जैन अजैन बच्चा ये जानने लगा।
२) घर घर 'पुच्छिसुणं' की धुन गुँजने लगी।
३) लोग अष्टमंगल, गर्भ-संस्कार, रसोई घर को मंदीर बनाने लगे। प्रसाद के रुप में भोजन करने लगे
४) कैसी क्षमा लेनी -कैसी क्षमा देनी। कैसे घर में बडे-बुर्जुग का आदर करना ये जानने लगे।
५) स्थानक में व्याख्यान में, युवक युवतियाँ, बहुत सारे भाई बच्चे नजर आने लगे।
६) जहाँ नवकार मंत्र गुंजता नहीं था वहाँ हर व्यक्ति पंच परमेष्ठी के शरण में रहने लगा।
७) लोग कौनसा भी कार्य करने के लिए परमात्मा की आज्ञा लेने लगे। जिससे उनको कार्य सिध्दी प्राप्त हुई।
८) वंदना का महत्व, आनंद प्रसाद, जिसमें प्रभु का साक्षात दर्शन हुआ ।
९) उत्तराध्यायन से महावीर वाणी सुनकर, सही मायने में सच में कितने जैन बन गये।
१०) ध्यान शिबीर भी जबरदस्त कामयाब हुए।
११) डॉक्टर्स, वकील पहली बार बड़ी बड़ी संख्या में स्थानक में पहुँचे।
१२) आज बड़े बड़े अस्पतालों में गरिबों के लिए, मरीजों के लिए - पुरुषाकार के सदस्य ध्यान साधना द्वारा ट्रीटमेंट देते है। मरिजों को भी कितना फायदा हो रहा है।
१३) गुरु गौतम की लब्धी घर घर पहुँचाने में भी इनका हाथ है।
१४) परिवारों को सुखी बनाना, घर को मंदीर बनाना, अपना मॅरेज लाईफ कैसे सुखी करना, हर बात में इनका प्रयास जारी है।

लक्ष सिर्फ एक ही -

प्रभु महावीर की वाणी उनकी सीख घर-घर कैसी पहुँचे? और हर जीव उससे कैसे लाभान्वित हो जाये?

किन किन साधु - साध्वीयोंने किया ये सब? किन किन को इसकी खबर थी? मैं नहीं कहती कि, आज तक एक भी साधु-साध्वी प्रखर नहीं थे। पर जो इन्होंने, युवा पिढी तक हम तक महावीर घर घर पहुँचाये आज तक किसने पहुँचाये? इन्होंने प्रॅक्टीकल, ह्युमन लाईफ जीने का तरीका हमें सिखाया जिससे हम पॉझिटिव्ह बन गये।

आज वो युवाचार्य बने या नहीं बने। उन्हें कोई फरक नहीं पडता। वो तो अपने महावीर के धुन में मस्त है। एकांतर तप करते है। उग्र विहार करते है। अपने लक्ष की ओर, उसी मस्तीसे, जोश से, उल्हास से- हर डगर डगर पर महावीर के संग झूमते चले जा रहे है।

और ये सब सिर्फ एक संत के साथ प.पु. 'तीर्थेश ऋषिजी' जो इनकी सेवा में है। जो उनके कदम कदम पर उन्हें साथ दे रहे है और आगे बढ़ रहे है।

'नाज है हमें ऐसे संत पर'

''ऐसे समवसरण में हम सब को इन्होंने बैठाया, उत्तराध्ययन के साथ महावीर का एक एक रंग दिखाया, समाचारी के साथ हमें जिना सिखाया, ऐसे उपाध्यायजी के साथ हमारी आत्मा हरखाए ।

क्योंकि सच में महावीर का जीओ और जीने दो इन्होंने ही सिखाया!!''

हम छोटे है नासमझ है। किसीको दुखाने हेतु यह लेख नहीं लिखा। पर हमारे कुछ प्रश्न है। कुछ शंकाएँ है। जो नियमावली घोषीत हुई साधु-साध्वीयों के लिए क्या वह सच में पाली जायेगी? क्या वह पालने योग्य है? उसका निरीक्षण कौन करेगा? नहीं पाले तो क्या अनुशासन? जिनशासन?

भगवान ने चारों तीर्थ की स्थापना की। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका कितना महत्व दिया जाता है साध्वीयोंको? क्यों नहीं?

पाश्चात्य संस्कृती हो या अपनी- स्त्री को बडा मान और उच्च स्थान दिया गया है। 'लेडीज फर्स्ट' ये सब आप जानते ही हो। अपने सम्मेलन तथा स्थानक के अपने कार्यक्रमों में साधु-साध्वी दोनों उपस्थित होते हैं फिर भी सब डिसीजन साधु या श्रावक ही क्यों लेते है? साध्वीयों का तथा श्राविकाओंका अस्तित्व, वर्चस्व क्यों नहीं देखा जाता है?

साधु संमेलन में भी साध्वीजी क्यों नहीं बोले? उनके विचार-विमर्श क्यों नहीं लिये? समझ नहीं पाती ये कैसा System । मेरे महावीर तो एक, उनकी वाणी एक, पर उनकी राहें अनेक! कौनसी राह पर चले प्रभु! आप कहाँ, कौनसे पथ या मार्ग पर मिलोगे?

मेरा जिनशासन! •

वधू-वर जाहिरात 'जैन जागृति' मासिकात व वेबसाईटवर द्या.

हजारो जैन परिवार व त्यांचे नातेवाईक,

मित्रपरिवार पर्यंत पोहचा.

आपणांस वधू-वर निवडताना योग्य चॉईस मिळण्यास मदत होईल.

आनंद तीर्थ, चिचोंडी – वर्षीतप पारणे संपन्न

आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमी चिचोंडी आनंद तीर्थ येथे अक्षय तृतीयेच्या दिवशी वर्षीतप पारण्याचे आयोजन करण्यात आले. उपाध्याय प.पू. श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा. हे इंदौर येथून ५५० कि.मी. उग्र विहार १७ दिवसात करुन वर्षीतप पारण्यासाठी चिचोंडी येथे आले. यावर्षी ९८ वर्षीतप पारणे या तीर्थभूमीवर हजारो लोकांच्या उपस्थितीत संपन्न झाले. गुरुआनंद फाऊंडेशन व श्री पारस फाऊंडेशन, पुणे यांनी या कार्यक्रमाचे आयोजन केले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यात अहमदनगर येथील आनंद तीर्थच्या कार्यकर्त्यांचे मोठे योगदान लाभले.

सकाळी जैन स्थानका पासून आनंद तीर्थ पर्यंत वर्षीतप तपस्वीची भव्य मिरवणूक काढण्यात आली. कार्यक्रमासाठी व वर्षीतप पारण्यासाठी शाही मांडव उभारण्यात आला होता. उपाध्याय श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा. व श्री तीर्थशऋषिजी म.सा., साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाजी, श्री प्रशंमदर्शनाजी आदी ठाणा ६ यांचे व्याख्यान, गुरु आनंद फाऊंडेशनचे प्रमुख श्री. सतिशजी सुराणा यांची प्रस्तावना, श्री पारस फौंडेशनचे श्री. अरुण कटारीया यांनी स्वागत, जैन कॉन्फ्रंसच्या सौ. रुचिरा सुराणा यांचे मनोगत, तपस्वीचा सत्कार, पारणा इ. कार्यक्रम संपन्न झाले.

गुरु आनंद फाऊंडेशन द्वारा चिचोंडी येथे ३५ एकर जमिनीत आनंद तीर्थ निर्माणचे कार्य सुरु झाले आहे. गतवर्षी अक्षय तृतीया २ मे २०१४ रोजी उपाध्याय श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा. आदी ठाणा व हजारो लोकांच्या उपस्थितीत भूमीशुद्धीचा कार्यक्रम व वर्षीतपचे पारणे संपन्न झाले होते. या एक वर्षात आनंद तीर्थचा मास्टर प्लॅन तयार झाला असून सरकारच्या सर्व कायदेशीर बाबीची पूर्तता करुन आनंद तीर्थचा प्लॅन सरकारकडून मंजूर झालेला आहे. आता लवकरच आनंद तीर्थच्या पहिल्या टप्प्याचे बांधकाम सुरु होणार आहे. या पहिल्या टप्यात वर्षीतप पारणा महोत्सवासाठी भव्य सभा मंडप, धर्मशाळा, भोजन शाळा, वृद्धाश्रम, गुरुचरण तीर्थ इ. निर्माण करण्यात येणार आहे. पुढील वर्षी वर्षीतप पारण्याच्या वेळी यातील विविध बिल्डिंगचे उद्घाटन करण्याचा मानस गुरु आनंद फाऊंडेशनच्या कार्यकारिणीचा आहे.

अत्याधुनिक तीर्थ व श्रध्दास्थान निर्माणच्या या कार्यास सर्व समाज बांधवानी तन, मन व धनाने सहकार्य करावे व पुढील वर्षी आपल्या परिवारातील वर्षीतप पारणा आनंद तीर्थ चिचोंडी येथे करण्याचे नियोजन करावे.

उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. व श्री तीर्थेशऋषिजी म.सा. यांच्या या वर्षीचा चातुर्मास नाशिक रोड येथे होणार आहे. ●

कव्हर तपशील, मे २०१५

❖ **मांगीतुंगी तीर्थक्षेत्र - नाशिक**

मांगीतुंगी तीर्थक्षेत्र जि. नाशिक येथे १०८ फूट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव यांची प्रतिमा निर्माण करण्याचे कार्य चालू आहे. ११ ते १८ फेब्रुवारी २०१६ मध्ये पंचकल्याणक प्रतिष्ठा व महाकुंभ मस्तकाभिषेक सोहळा संपन्न होणार आहे.

❖ **गुरुमंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव, पुणे**

श्री सौधर्म बृहदतपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ व श्री राजराजेंद्र सुरि जैन ज्ञान मंदिर द्वारा शुक्रवार पेठ, पुणे येथील नवनिर्मित जिनगुरुची प्रतिष्ठा गच्छाधिपति श्री जयंत सेन सुरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या निश्रेत ८ एप्रिल रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाली.

❖ **साधू-साध्वी संमेलन, इन्दौर**

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय साधू-साध्वी संमेलन इन्दौर येथे दि. २१ ते २९ मार्च या दरम्यान संपन्न झाले. २९ तारखेच्या मुख्य कार्यक्रमाला अनेक मान्यवर व सुमारे एक लाख लोकांचा जनसमुदाय उपस्थित होता. श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. यांना युवाचार्याची चादर ओढवण्यात आली.

❖ **आनंद तीर्थ, चिचोंडी - वर्षीतप पारणा**

आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमि चिचोंडी, आनंद तीर्थ येथे अक्षयतृतीयेच्या दिवशी उपाध्याय प.पू. श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा व साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाजी आदि ठाणा ६ यांच्या सन्निध्यात वर्षीतप पारण्याचे आयोजन करण्यात आले.

❖ **जितो पुणे चॅप्टर B 2 B**

जितो पुणे चॅप्टर B 2 B तर्फे फॅमिली बिझनेस स्कील या विषयावर हॉटेल लि मेरेडियन, पुणे येथे श्री परिमल मर्चन्ट यांच्या व्याख्यानाचे आयोजन केले. यावेळी जितो युथ विंगची स्थापना करताना श्री. शांतीलालजी कवर, श्री. रसिकलालजी धारीवाल, श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री. राजेशजी साकला, श्री. अजीत सेठीया, श्री. विजय भंडारी, श्री. अभय बाफना, श्री. संतोष जैन इ. मान्यवर.

❖ **सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे**

पुणे येथील सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्युटने आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील आशिया एज्युकेशन समिट २०१५ मध्ये चार ॲचिव्ह ॲवॉर्ड मिळवले. सुर्यदत्ता ग्रुपचे अध्यक्ष श्री. संजय चोरडिया यांनी ऑलिंपिक विजेता नेमबाज अभिनव बिंद्रा आणि भारत विरेंद्र सेहगाव यांच्या हस्ते हे पुरस्कार स्वीकारले.

❖ **श्री पार्श्वनाथ फूड इंडस्ट्रीज - उद्घाटन**

उंड्री, पुणे येथे श्री. आनंद छाजेड व श्री. राजेंद्र छाजेड यांच्या पार्श्वनाथ फूड इंडस्ट्रीजचे उद्घाटन ९ फेब्रुवारी रोजी श्री. बाबुलालजी छाजेड व सौ. पद्मा छाजेड यांच्या हस्ते झाले. Bake Munch या नावाने बेकरी उत्पादने येथे होणार आहे.

❖ **मानव मिलन संस्था, पुणे**

पुणे येथील मानव मिलन संस्थेतर्फे पद्मावती नगर येथील श्री गुरुगौतम मुनि मेडिकल ॲण्ड चॅरिटेबल ट्रस्ट संचालित डायलिसिस सेंटरला एक डायलिसिस मशिन डॉ. के. एच. संचेती यांच्या हस्ते भेट दिली. यावेळी मानव मिलन संस्थेच्या विजया श्रीश्रीमाळ, सुषमा लुंकड, इच्छाबाई बोरा, ललिता कांकरिया, शोभा नवलखा, ललिता ओसवाल, सुषमा मुनोत, प्रमिला कटारिया, प्रेमा ढुमावत इ. सभासद उपस्थित होते. ●

समाजाची आवड, समाजाची निवड

जैन जागृति

गुरु मंदीर प्रतिष्ठा महोत्सव, पुणे

श्री सौधर्म बृहदतपोगच्छीय त्रिस्तुतीक संघ एवम् श्री राजराजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदीर-पुणे द्वारा नव निर्मित जिन गुरु मंदीर की प्रतिष्ठा राष्ट्रसंत, शासन प्रभावक गच्दाधिपति श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवम् साध्वी श्री कोमल लताश्री जी म.सा. आदि ठाणा की शुभ निश्रा में ८६४, शुक्रवार पेठ, पार्श्वनाथ चौक, पुणे में ८ अप्रैल २०१५ को शुभ बेला में संपन्न हुई। साथ साथ यक्ष-यक्षिणी को बिराजीत किया गया। मूलनायक श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी है। दोनों तरफ श्री गौतम स्वामीजी एवम् श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. बिराजमान किये है।

संवत २०४९ चैत्र सुदी ७ के दिन आचार्य श्री जयंत सेन सूरीश्वरजी म.सा. के शुभ हस्ते चित्र प्रतिमा की स्थापना हुई थी। पूना शहर में गुरुमंदीर का निर्माण हो इसी भावना को श्री संघ ने स्वीकार किया था। जो आज नूतन जिन-गुरु मंदीर बनकर तैयार हुआ है।

राष्ट्रसंत आचार्य जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. को ४ अप्रैल २०१५ शनिवार प्रतिष्ठा के प्रथम दिन श्री सौधर्म बृहद तपागच्छीय त्रिस्तुतीक जैन संघ-पुणे द्वारा प्रतिष्ठा शिरोमणी पद (उपाधी) से महाराष्ट्र के राज्यमंत्री श्री दिलीपजी कांबळे की उपस्थिती में त्रिस्तुतीक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई घरु की उपस्थिती, श्री संघ के पूना के अध्यक्ष श्री दीपचंदजी कटारिया, उपाध्यक्ष छगनलालजी सोलंकी, घेवरचंदजी ढालावत एवम् मध्य प्रदेश के शिक्षामंत्री पारसजी जैन, मीठालाल जैन, विमलचंद संघवी भारत भर के गणमान्य हजारो महानुभावों की उपस्थिती में सन्मान पत्र एवम् कांबली से नवाजा गया।

प्रतिदिन नवकारसी - स्वामीवात्सल्य के साथ-पूजन का आयोजन किया था। प्रति दिन शाम को भक्ति संगीत के कार्यक्रम में श्री बिपीन पोरवाल ॲन्ड पार्टी बेंगलोर ने खूप जोरदार शमा बांधा। रात ११.०० बजे तक कार्यक्रम चलता था। इसके लिये राजगृही नगरी का निर्माण खास किया था। स्वामी वात्सल्य के लिये भरत चक्रवर्ती नगरी बनाई थी।

मेहंदी वितरण गाव सांझी,भक्ती संगीत में लकी ड्रॉ, राजस्थानी नृत्य, बदनावर का बॅन्ड (म.प्र.) ढोल नगाडा, शहनाई, आकर्षक रोशनाई, मंडप, प्रतिदिन आंगी, वगैरे कार्यक्रम का आयोजन शानदार ढंग से संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने में श्री संघ के अध्यक्ष दीपचंदजी कटारिया, उपाध्यक्ष छगनलालजी सोलंकी, जयंतीलालजी नाणेचा, बच्चुभाई ओसवाल, भागचंदजी फोलामुथा, भंवरलालजी सोलंकी, चंपकजी खिंवसरा, अशोकजी श्रीश्रीमाल, घेवरचंदजी ढालावत, किशोरजी हिंगड, भंवरलालजी मेहता, उत्तमचंदजी कोठारी, पारसमलजी खिंवसरा, अनीलजी राणावत, किशोरजी जैन, कमलेशजी रुपावत, किशोरजी ललवाणी, गौतमजी सोलंकी, महेन्द्रजी खिंवसरा, मनोजजी कोठारी, प्रतापजी ढालावत, हरचंदजी छाजेड, प्रमोदजी ललवाणी, भरतजी फूलफगर, विमलचंदजी संघवी, मिठालाल जैन, राजेश फुलफगर, नीतीन जैन, विनोदजी पारेख, मिलापचंदजी कावेडीया, अखील भारतीय राजेन्द्र नवयुवक परिषद के कार्यकर्ता, धार्मिक संस्थायें, पुरुष मंडल, महिला मंडल तथा अन्य मान्यवर कार्यकर्ताओं के सहयोग से प्रतिष्ठा महोत्सव सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। •

जैन समाजाचा पद्म पुरस्कारांवर मोठा ठसा

१०४ पैकी ७ पुरस्कार समाज बांधवांना – विविध क्षेत्रांतील कामगिरीचा सन्मान

नवी दिल्ली : कोणाच्या चटकन लक्षात आले नसले तरी प्रजासत्ताक दिनानिमित्त यंदा जाहीर झालेल्या विविध 'पद्म' पुरस्कारांवर जैन समाजाने मोठा ठसा उमटवला आहे. देशाच्या एकूण लोकसंख्येत अवघे ०.४ टक्के एवढे अल्प प्रमाण असलेल्या या समाजाने 'पद्म' पुरस्कारांमध्ये मात्र त्याहून कितीतरी अधिक म्हणजे सात टक्क्यांचा वाटा पटकाविला आहे. यंदा 'पद्म' पुरस्कारांनी गौरविलेल्या एकूण १०४ मान्यवरांपैकी सातजण जैन समाजाचे आहेत.

यंदाच्या मानकऱ्यांमध्ये एक 'पद्मविभूषण' आणि सहा 'पद्मश्री' जैन समाजातून निवडले गेले आहेत, हे लक्षणीय आहे. शिवाय परोपकारी सेवा, पारंपरिक आणि प्रायोगिक कला व प्रशासन यासह ज्या विविध क्षेत्रांसाठी या मान्यवरांचा गौरव करण्यात आला आहे त्यावरुन जैन समाजाचे कार्य किती विविधांगी आहे, हेही स्पष्ट होते.

जैन समाजातील ज्या महानुभावांना राष्ट्रपती प्रणव मुखर्जी यांच्या हस्ते गौरविण्यात आले त्यांत डॉ. डी. वीरेंद्र हेग्गडे (पद्मविभूषण), राहुल जैन, रवींद्र जैन, संजय लीला भन्साळी, वीरेंद्र राज मेहता, तारक मेहता आणि मीठा लाल मेहता (सर्व पद्मश्री) यांचा समावेश आहे. यापैकी मिठालाल मेहता यांचा मरणोत्तर गौरव करण्यात आला.

डॉ. हेगडे हे थोर परोपकारी लोकसेवक व दानशूर असून ते धर्मस्थळ मंदिराचे प्रमुख आहेत. त्यांच्या संस्थेतर्फे आयुर्वेद, निसर्गोपचार, दंतवैद्यक, अभियांत्रिकी, वैद्यकशास्त्र, कायदा व व्यवस्थापनशास्त्र यांचे शिक्षण देणाऱ्या महाविद्यालयांसह एकूण ४० विविध शिक्षणसंस्था चालविल्या जातात. याखेरीज ग्रामीण रोजगार, कौशल्य विकास, शाश्वत ऊर्जास्त्रोत, व्यसनमुक्ती व मंदिरांचा जीर्णोद्धार अशी कामेही डॉ. हेगडे यांच्या संस्थांतर्फे केली जातात. मिठा लाल मेहता व वीरेंद्र राज मेहता हे निवृत्त सनदी अधिकारी आहेत. संजय लीला भन्साळी व रवींद्र जैन हे अनुक्रमे लोकप्रिय चित्रपट निर्माते व संगीत दिग्दर्शक आहेत. तारक मेहता हे गुजराती रंगभूमी व छोट्या पडद्यावरील प्रथितयश अभिनेते व दिग्दर्शक आहेत. राहूल जैन हे पारंपरिक वस्त्रविणकामतज्ज्ञ व आघाडीचे टेक्स्टाईल डिझायनर आहेत.

शिक्षण, प्रबोधनात आघाडी

जैन समाज शिक्षण व प्रबोधनात नेहमीच आघाडीवर राहिला आहे. जैन समाजातील साक्षरतेचे ९४.१ टक्के हे साक्षरतेचे प्रमाण ६४.८ टक्के या राष्ट्रीय सरासरीहून कितीतरी जास्त आहे. शिवाय पुरुष व महिलांच्या साक्षरतेमधील तफावत जैन समाजात सर्वात कमी आहे. देश पातळीवर हे प्रमाण सरासरी २१ टक्के आहे तर जैन समाजात ही तफावत जेमतेम ६.८ टक्के आहे. भारताच्या अंतराळ संशोधन कार्यक्रमाचे जनक विक्रम साराभाई व थोर कवी, विचारवंत आणि तत्वचिंतक बनारसीदास हेही जैन समाजाचे होते. ●

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति

JATF - Pune Centre

Nanda Parje

Mitali Sancheti

Shweta Sancheti

Kamlesh Jain

Pravin Patil

Ramesh Runwal

JATF - Jito Administrative training foundation Pune Centre has been once again successful in producing very good results through MPSC Civil Services Exam 2014.

MPSC Interview Results 2014

Name	**Post**
Nanda Paraje	DySP
Mitali Sancheti	DySP
Shweta Sancheti	Tehsildar
Kamlesh Jain	Naib Tehsildar
Pravin Patil	Asst. BDO
Ramesh Runwal	Asst. BDO

JATF takes great pride in their success & heartly congratulates all the successful candidates. It also wishes them a bright future.

Shri Rasiklalji Dhariwal, Smt. Shobhaji Dhariwal, Shri Chakorji Gandhi, Smt. Nalini Rathod & the entire JATF family. ●

श्री. विजय वल्लभ स्कूल, पुणे
पदवी प्रदान समारंभ

आचार्य श्री विजय वल्लभ प्री-प्रायमरी स्कूल मध्ये दिनांक १ एप्रिल २०१५ रोजी Sr. kg. च्या मुलांसाठी पदवी प्रदान समारंभ आयोजित करण्यात आला होता. या कार्यक्रमाच्या प्रमुख पाहुण्या श्रीमती पुष्पाजी विमलकुमारजी जैन यांनी चिमुकल्यांना पदवी प्रदान करून त्यांचे कौतुक केले. मुलांनी व पालकांनी शाळेबद्दल आपले मनोगत व्यक्त करून कार्यक्रमाची शोभा वाढविली. या कार्यक्रमास शाळेचे चेअरमन श्री. सुभाषजी परमार उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे आयोजन मुख्याध्यापिका सौ. जसिंता मॅन्यूअल यांनी केले. ●

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति